IJNRD.ORG ISSN : 2456-4184
INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD) | IJNRD.ORG
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

ऊधम सिंह नगर के वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों में कार्यरत् शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन

पूजा पाण्डे
शोधार्थिनी
शिक्षा संकाय
मदरहुड विश्वविद्यालय,
रुड़की, जिला– हरिद्वार
उत्तराखण्ड

प्रो0 (डॉ0) बबीता सिंह
निर्देशिका,
शिक्षा संकाय
मदरहुड विश्वविद्यालय,
रुड़की, जिला– हरिद्वार
उत्तराखण्ड

डॉ0 एस0के0 त्रिपाठी
सह–निर्देशक
प्राचार्य, शिक्षा विभाग
एस0आई0एम0टी0,
उ0 सिंह नगर,
उत्तराखण्ड

सारांष

वित्तपोषित महाविद्यालयों के शिक्षक सामान्यतः अधिक संतुष्ट पाए गए हैं क्योंकि उन्हें नियमित और पर्याप्त वेतन, पेंशन, और अन्य वित्तीय लाभ प्राप्त होते हैं। वहीं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों में वेतन संरचना अस्थिर और कम आकर्षक हो सकती है, जिससे शिक्षकों में असंतोष अधिक होता है। वित्तपोषित महाविद्यालयों में शिक्षकों को नौकरी की सुरक्षा और स्थायित्व का अनुभव होता है, जो उनकी कार्य सन्तुष्टि में महत्वपूर्ण योगदान देता है। इसके विपरीत, स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों में शिक्षकों को नौकरी की अस्थिरता का सामना करना पड़ता है, जिससे उनकी सन्तुष्टि में कमी आती है। वित्तपोषित महाविद्यालयों में शिक्षण सामग्री, पुस्तकालय, प्रयोगशालाएं, और अन्य शैक्षिक संसाधनों की उपलब्धता बेहतर होती है। यह शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि को बढ़ाने में मदद करता है। स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों में अक्सर संसाधनों की कमी होती है, जो शिक्षकों के काम को चुनौतीपूर्ण बनाती है और उनकी संतुष्टि को कम करती है। वित्तपोषित महाविद्यालयों में प्रशासनिक समर्थन और कार्य वातावरण अधिक सकारात्मक पाया गया है, जिससे शिक्षकों को अपने कार्यों में आसानी होती है और वे संतुष्ट रहते हैं। स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों में प्रशासनिक प्रक्रियाएँ जटिल और कम सहयोगी हो सकती हैं, जिससे असंतोष बढ़ता है। वित्तपोषित महाविद्यालयों में शिक्षकों के लिए नियमित प्रशिक्षण और विकास कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं, जो उनके पेशेवर विकास में सहायक होते हैं। स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों में ऐसे अवसरों की कमी हो सकती है, जिससे शिक्षकों को अपने कौशल और ज्ञान में वृद्धि के कम अवसर मिलते हैं। दोनों प्रकार

के महाविद्यालयों में शिक्षकों को कार्य का बोझ अधिक होता है, लेकिन स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों में शिक्षकों को अतिरिक्त प्रशासनिक कार्य भी करने पड़ सकते हैं, जिससे उनकी कार्य सन्तुष्टि प्रभावित होती है। संतुष्ट शिक्षक मानसिक रूप से स्वस्थ रहते हैं और उनका कार्य–जीवन संतुलन बेहतर होता है। वित्तपोषित महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षक इस मामले में अधिक संतुष्ट पाए गए, जबकि स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों में शिक्षकों को अधिक तनाव और कार्य–जीवन असंतुलन का सामना करना पड़ता है। वित्तपोषित महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की तुलना में अधिक है। इसका मुख्य कारण वेतन, नौकरी की स्थिरता, संसाधनों की उपलब्धता, और प्रशासनिक समर्थन है। स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों को अपने शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि बढ़ाने के लिए वेतन संरचना में सुधार, संसाधनों की बेहतर उपलब्धता, और प्रशासनिक प्रक्रियाओं को सरल बनाने पर ध्यान देना चाहिए। **शोध के निष्कर्ष** – ऊधम सिंह नगर के वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों में कार्यरत पुरुष शिक्षकों की कार्य–सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया, ऊधम सिंह नगर के वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षकों की कार्य–सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

मुख्य शब्द :– वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालय, शिक्षक एवं कार्य–सन्तुष्टि।

1. प्रस्तावना

शिक्षा क्षेत्र में शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि एक महत्वपूर्ण विषय है। यह न केवल शिक्षकों की व्यक्तिगत एवं पेशेवर जीवन की गुणवत्ता को प्रभावित करता है, बल्कि छात्रों की शिक्षा और संस्थान की समग्र कार्यप्रणाली पर भी प्रभाव डालता है। विशेष रूप से, वित्तपोषित (सरकारी अनुदान प्राप्त) एवं स्ववित्तपोषित (स्वयं के संसाधनों पर आधारित) महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि में महत्वपूर्ण अंतर हो सकता है। इस निबंध में, हम इन दोनों प्रकार के महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि के विभिन्न पहलुओं का विश्लेषण करेंगे।

वित्तपोषित महाविद्यालयों के शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि

वित्तपोषित महाविद्यालयों के शिक्षक नियमित एवं पर्याप्त वेतन प्राप्त करते हैं, जो सरकारी नियमों एवं निर्देशों के अनुसार होता है। इसके अतिरिक्त, उन्हें अन्य वित्तीय लाभ जैसे पेंशन, ग्रेच्युटी, एवं स्वास्थ्य बीमा भी प्राप्त होते हैं। वित्तपोषित महाविद्यालयों में स्थायित्व का स्तर अधिक होता है। शिक्षकों को नौकरी की सुरक्षा और स्थायित्व का अनुभव होता है, जिससे उनकी कार्य सन्तुष्टि में वृद्धि होती है। सरकारी अनुदान प्राप्त महाविद्यालयों में शैक्षिक संसाधनों की उपलब्धता अधिक होती है, जिससे शिक्षकों को अध्यापन कार्य में सहूलियत होती है।

स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि

स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों में वेतन संरचना बहुत विविध हो सकती है और इसमें स्थायित्व की कमी हो सकती है। कई बार शिक्षकों को समय पर वेतन नहीं मिलता, जिससे असन्तुष्टि पैदा होती है। स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों में नौकरी की सुरक्षा कम होती है। शिक्षकों को नौकरी खोने का डर रहता है, जिससे उनकी कार्य सन्तुष्टि प्रभावित होती है। कई स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों में शैक्षिक संसाधनों की कमी होती है, जिससे शिक्षकों को अपनी शिक्षण गतिविधियों को सुचारु रूप से चलाने में कठिनाई होती है।

समानताएँ एवं विभिन्नताएँ

दोनों प्रकार के महाविद्यालयों में शिक्षकों को कार्य का भार समान रूप से अधिक होता है, लेकिन स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों में अतिरिक्त प्रशासनिक कार्य भी करने पड़ सकते हैं। वित्तपोषित महाविद्यालयों में प्रशासनिक समर्थन अधिक होता है, जबकि स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों में प्रशासनिक प्रक्रियाएँ जटिल और कम समर्थन वाली हो सकती हैं। वित्तपोषित महाविद्यालयों में शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण एवं विकास कार्यक्रम नियमित रूप से आयोजित होते हैं, जबकि स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों में इनकी संख्या कम हो सकती है।

वित्तपोषित और स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि में कई महत्वपूर्ण अंतर होते हैं। वित्तपोषित महाविद्यालयों में अधिक वेतन, स्थायित्व, और संसाधनों की उपलब्धता से शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि अधिक होती है, जबकि स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों में वेतन अस्थिरता, नौकरी की सुरक्षा की कमी, और संसाधनों की कमी के कारण असन्तुष्टि अधिक हो सकती है। शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि को बढ़ाने के लिए दोनों प्रकार के महाविद्यालयों को अपने कार्य वातावरण, वेतन संरचना, और संसाधनों की उपलब्धता में सुधार करना चाहिए। इससे न केवल शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि में वृद्धि होगी, बल्कि शिक्षा की गुणवत्ता में भी सुधार होगा।

2. अध्ययन की आवष्यकता एवं महत्व

ऊधम सिंह नगर, उत्तराखंड का एक महत्वपूर्ण जिला है, जहां कई वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालय स्थित हैं। इन महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि का अध्ययन शिक्षा क्षेत्र में गुणवत्ता सुधार एवं नीति निर्माण के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस निबंध में, हम इस अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व पर प्रकाश डालेंगे।

शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि का सीधा प्रभाव शिक्षा की गुणवत्ता पर पड़ता है। संतुष्ट शिक्षक अधिक प्रेरित होते हैं और बेहतर शिक्षण प्रदान करते हैं। इसलिए, कार्य सन्तुष्टि का अध्ययन करके शिक्षा की

गुणवत्ता में सुधार किया जा सकता है। अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षों का उपयोग सरकारी एवं संस्थागत नीतियों को सुधारने में किया जा सकता है। यह नीतियां शिक्षकों की कार्य स्थिति को बेहतर बनाने और उनकी संतुष्टि को बढ़ाने के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकती हैं। अध्ययन से शिक्षकों की समस्याओं एवं चुनौतियों को पहचानने में मदद मिलती है। इससे प्रशासनिक एवं प्रबंधन इकाइयों को इन समस्याओं के समाधान हेतु उचित कदम उठाने का मार्गदर्शन प्राप्त होता है। शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि से संस्थान की प्रतिष्ठा एवं विकास में योगदान मिलता है। संतुष्ट शिक्षक संस्थान की सकारात्मक छवि का निर्माण करते हैं, जिससे नए छात्रों एवं शिक्षकों को आकर्षित करने में मदद मिलती है।

कार्य सन्तुष्टि का स्तर शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करता है। संतुष्ट शिक्षक मानसिक रूप से स्वस्थ रहते हैं, जिससे उनका कार्य प्रदर्शन बेहतर होता है। अध्ययन से यह समझने में मदद मिलती है कि किन कारकों से शिक्षकों के कैरियर विकास को प्रोत्साहन मिलता है। इससे शिक्षकों के व्यक्तिगत एवं व्यावसायिक विकास में सहूलियत होती है। शिक्षक समाज के निर्माता होते हैं। उनकी कार्य सन्तुष्टि से न केवल संस्थान में बल्कि व्यापक समुदाय में भी सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। संतुष्ट शिक्षक अपने विद्यार्थियों में सकारात्मक सोच एवं व्यवहार का संचार करते हैं। अध्ययन से पता चलता है कि किस प्रकार के संसाधन एवं सुविधाएं शिक्षकों की सन्तुष्टि में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इससे संसाधनों के उचित प्रबंधन एवं आवंटन में मदद मिलती है। यह अध्ययन शैक्षिक अनुसंधान के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान देता है। इससे अन्य अनुसंधानकर्ताओं को नए दृष्टिकोण एवं अवधारणाओं के विकास में सहायता मिलती है।

ऊधम सिंह नगर के वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि का अध्ययन अत्यंत आवश्यक एवं महत्वपूर्ण है। इससे शिक्षा की गुणवत्ता, नीति निर्माण, शिक्षकों की समस्याओं का समाधान, एवं संस्थागत विकास में व्यापक सुधार किया जा सकता है। यह अध्ययन न केवल शिक्षकों बल्कि समाज एवं समुदाय के समग्र विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

3. सम्बन्धित शोध साहित्य

पमेला, रबुरू (2017) – ने ''केन्या के सेकेन्ड्री स्कूल शिक्षकों की सन्तुष्टि पर लैगिक प्रभाव का अध्ययन'', किया।

कुमार, आर0 (2020) ने अपने शोध शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालयों में कार्यरत् शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन किया।

प्रसाद, एच0 (2021) ने अपने शोध में "मुरादाबाद जनपद के प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि'' का अध्ययन किया।

पचौरी सुरेष चन्द्र एवं शुक्ला मनोज कुमार (2022) ने अपने शोध जनपद देहरादून के माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की व्यावसायिक सन्तुष्टि का अध्ययन किया।

4. समस्या कथन

ऊधम सिंह नगर के वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों में कार्यरत् शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन।

5. अध्ययन के उद्देष्य

1. ऊधम सिंह नगर के वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों में कार्यरत पुरुष शिक्षकों की कार्य–सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. ऊधम सिंह नगर के वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षकों की कार्य–सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

6. अध्ययन की परिकल्पना

1. ऊधम सिंह नगर के वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों में कार्यरत पुरुष शिक्षकों की कार्य–सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर नहीं है।
2. ऊधम सिंह नगर के वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षकों की कार्य–सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर नहीं है।

7. आंकड़ा संग्रहण के उपकरण

प्रस्तुत लघु शोध हेतु आंकड़ों के संकलन के लिए ऊधम सिंह नगर के वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों में कार्यरत पुरुष शिक्षकों से व्यक्तिगत सम्पर्क करके प्रश्नावली के माध्यम से आंकड़ों का संकलन किया गया।

8. न्यादर्ष

वर्तमान लघु शोध हेतु 200 शिक्षकों को शामिल किया गया है।

9. उपकरण

कार्य सन्तुष्टि मापनी – डॉ॰ (श्रीमती) मीरा दीक्षित द्वारा निर्मित प्रश्नावली।

10. परिकल्पनाओं का विष्लेषण एवं व्याख्या

परिकल्पना क्रमांक 1 :– ऊधम सिंह नगर के वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों में कार्यरत पुरुष शिक्षकों की कार्य–सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका संख्या – 1

ऊधम सिंह नगर के वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों में कार्यरत पुरुष शिक्षकों की कार्य–सन्तुष्टि का मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात का विश्लेषण एवं व्याख्या

पुरुष शिक्षक	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
वित्तपोषित	**50**	16.83	3.17	0.31	***
स्ववित्तपोषित	**50**	17.09	3.09		

व्याख्या – तालिका संख्या 1 में ऊधम सिंह नगर के वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों में कार्यरत पुरुष शिक्षकों की कार्य–सन्तुष्टि को दर्शाया गया है। तालिका में ऊधम सिंह नगर के वित्तपोषित महाविद्यालयों में कार्यरत पुरुष शिक्षकों की कार्य–सन्तुष्टि का मध्यमान, मानक विचलन 16.83 एवं 3.17 प्राप्त हुआ है जबकि ऊधम सिंह नगर के स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों में कार्यरत पुरुष शिक्षकों की कार्य–सन्तुष्टि का का मध्यमान, मानक विचलन क्रमशः 17.09 एवं 3.09 प्राप्त हुआ है। दोनो समूहों के मध्य क्रान्तिक अनुपात का मान 0.31 प्राप्त हुआ है। प्राप्त क्रान्तिक अनुपात सार्थकता के दोनों स्तर से कम है। कम सार्थकता स्तर दोनों समूहों के मध्य सार्थक अन्तर को स्पष्ट नहीं करता है। इससे सिद्ध होता है कि ऊधम सिंह नगर के वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों में कार्यरत पुरुष शिक्षकों की कार्य–सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

परिकल्पना क्रमांक 2 :– ऊधम सिंह नगर के वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षकों की कार्य–सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका संख्या – 2

ऊधम सिंह नगर के वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षकों की कार्य–सन्तुष्टि का मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात का विश्लेषण एवं व्याख्या

महिला शिक्षक	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
वित्तपोषित	**50**	16.94	3.18	0.86	***
स्ववित्तपोषित	**50**	16.98	3.09		

व्याख्या – तालिका संख्या 2 में ऊधम सिंह नगर के वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षकों की कार्य–सन्तुष्टि को दर्शाया गया है। तालिका में ऊधम सिंह नगर के वित्तपोषित में कार्यरत महिला शिक्षकों की कार्य–सन्तुष्टि का मध्यमान, मानक विचलन 16.94 एवं 3.18 प्राप्त हुआ है जबकि ऊधम सिंह नगर के स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षकों की कार्य–सन्तुष्टि का का मध्यमान, मानक विचलन क्रमशः 16.98 एवं 3.09 प्राप्त हुआ है। दोनो समूहों के मध्य क्रान्तिक अनुपात का मान 0.86 प्राप्त हुआ है। प्राप्त क्रान्तिक अनुपात सार्थकता के दोनों स्तर से कम है। कम सार्थकता स्तर दोनों समूहों के मध्य सार्थक अन्तर को स्पष्ट नहीं करता है। इससे सिद्ध होता है कि ऊधम सिंह नगर के वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षकों की कार्य–सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

11. शोध के निष्कर्ष

1. ऊधम सिंह नगर के वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों में कार्यरत पुरुष शिक्षकों की कार्य–सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।
2. ऊधम सिंह नगर के वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षकों की कार्य–सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

12. सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- पमेला, रबुरू (2017). ''केन्या के सेकेन्ड्री स्कूल शिक्षकों की सन्तुष्टि पर लैगिक प्रभाव का अध्ययन'', पी0एच0डी0 (शिक्षा शास्त्र), ओगिंगा ओडिंगा विश्वविद्यालय, वोंडो कीनिया।

- कुमार, आर0 (2020). ''शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन'' शोध पत्र, कविताजंलि, वर्ष–9 अंक–17, अगस्त–2020, आईएसएसएन–2278–8344.

- प्रसाद, एच0 (2021). ''मुरादाबाद जनपद के प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि का अध्ययन'' शोध पत्र, शिक्षा शोध मंथन, वॉल्यूम – 7 नं0 2 अक्टूबर 2021 आई0एस0एस0एन0 2395 – 72 8एक्स।

- पचौरी सुरेश चन्द्र एवं शुक्ला मनोज कुमार (2022). ''जनपद देहरादून के माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की व्यावसायिक सन्तुष्टि का अध्ययन'', शोध पत्र, शिक्षा शोध मंथन, वॉ.8, नं01, अप्रैल 2020, आईएसएसएन : 2395–728 एक्स।